

श्रसाय रण

## EXTRAORDINARY

भाग I--- त्रवह 1

PART I-Section 1

प्राधिकार ने प्रकाशित

## PUBLISHED BY AUTHORITY

सं० 177]

नई दिल्ली, शत्रवार, **प्र**गस्त 11, 1972/श्रावरा 20, 1894

No. 177]

NEW DELHI, FRIDAY, AUGUST 11, 1972/SRAVANA 20, 1894

इस भाग में भिन्न पृष्ठ संख्या दी जाती है जिससे कि यह ग्रलग संकलन के रूप में रखा जा सके। Separate paging is given to this Part in order that it may be filed as a separate compilation

## MINISTRY OF FOREIGN TRADE

PUBLIC NOTICE

IMPORT TRADE CONTROL

New Delhi, the 11th August 1972

Subject.—Import of spare parts by industries located in Kandla Free Trade Zone.
(Amendment No. 15).

No. 115-TTC(PN)/72.—Under the existing policy, industries located in Kandla Free Trade Zone can avail of flexibility provision provided under paragraph 64 of the Import Trade Control Hand Book of Rules and Procedure, 1972-73 for utilising 10 per cent of the value of import licence (s) for raw materials and components for the import of spare parts. It has been represented that this provision is not enough to meet the requirements of spare parts by the industries operating in Kandla Free Trade Zone.

- 2. The matter has been considered and it has been decided that the industries in Kandla Free Trade Zone should be treated at par with the priority industries in the matter of claiming import licences for spare parts. Consequently, under pragraph 23 of Section 1, Part B of the Import Trade Control Policy for the year April, 1972-March, 1973 (Vol. II), the following sub-paragraph may be deemed to have been incorporated:—
  - "(x) The industries located in Kandla Free Trade Zone will be treated at pur with priority industries in so far as grant of import licences for spare parts is concerned. For working out the entitlement of import of spares, the same procedure as given in paragraph 6 of Section 1 of Import Trade Control Policy for the year April, 1972—March, 1973 (Vol. I) will apply."

K. T. SATARAWALA, iChief Controller of Imports & Exports.

## विवेश व्यापार मंत्रालय

श्रायात व्यापार नियंत्रण सार्वजनिक सूचना नई दिल्ली, 11 श्रगस्त, 1972

चिवयः — कान्डला स्थतंत्र व्यापार क्षेत्र में स्थित उद्योगों द्वारा फालत् पूर्जों का श्रायात (संशोधन सं० 15)[।

सं० 115-माई० टी० सी० (पी० एन०)/72 - वर्तमान नीति के अन्तर्गत, कान्डला स्वतन्त्र व्यापार क्षेत्र में स्थित उद्योग, श्रायात व्यापार नियंत्रण नियम तथा कियाविधि पुस्तक, हैंड बुक 1972-73 की कंडिका 84 के अन्तर्गत ढ़ील दी गई व्यवस्थाओं का फालतू पुर्जी के आयात के लिए कच्चे माल तथा संघटकों के लिए जारी किए गए आयात लाइसेंसों के मूल्य के 10 प्रतिशत तक के उपयोग के लिए, लाभ उठा सकते हैं। इस का अभियेदन किया गया है कि यह व्यवस्था कान्डला स्यतन्त्र व्यापार क्षेत्र में चाल् उद्योगों द्वारा फालत् पुर्जी को आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए काफी नहीं है।

2 मामले पर विचार किया गया है और यह निश्चय किया गया है कि फालतू पूजों के लिए आयात लाइसेंसों का दावा करने के मान ने में, कान्डना स्वतन्त्र ब्यापार क्षेत्र में स्थित उद्योग, प्राथमिकता प्रात उद्योगों के वरावर समझे जाने चाहिए। फनत: अप्रैल 1972—सार्च 1973 के लिए स्रायान व्यानार नियंत्रण नीति (वा० 2) के भाग बी के खंड 1 की कंडिका 83 के सन्तर्गत निम्निविवित उप-कंडिका की शामिल किया गया समझा जाए :---

"(10) जहां तक फालतू पुजी के जिए आयात लाइवेंस प्रदान करने का सम्बन्ध है, कान्डला म्बतन्त्व क्षेत्र में स्थित ज्योग प्राथमिकता पाप्त उद्योगों के बराबर माने जाएंगे। फालतू पुजी के प्रायात की हकदारी का हिसाब लगाने के लिए बही क्रियाविधि लागू होगी जो अप्रैय 1972 - मार्च 1973 वर्ष के लिए आयात व्यापार नियंत्रण नीति (था०1) के खंड 1 की केंडिका 6 में हो गई है।

के० टी० सतारावाला, मुख्य नियंत्रक, भ्रामात-निर्यात ।